पंजीयन प्रपत्र

नाम _____

पद _____

संस्था _____

_____

शोधपत्र का शीर्षक _____

_____

पंजीयन शुल्क: शिक्षक - 1500 रु. शोध छात्र व अन्य - 1000 रु.

- परिषद के आजीवन सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सहभागियों को परिषद का वार्षिक सदस्यता शुल्क रु. 100/- अतिरिक्त देय होगा

सभी सम्मानित सहभागियों से निवेदन है कि
पंजीकरण 5 दिसम्बर, 2015 तक अवश्य करा लें।

पंजीकरण शुल्क भेजने का पता:
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004
ड्राफ्ट हेतु: संयोजक, 42वाँ अधिवेशन, हिन्दी विभाग, रा.वि.वि., जयपुर
आर.टी.जी.एस. हेतु:
खातेदार का नाम- संयोजक, 42वाँ अधिवेशन, हिन्दी विभाग, रा.वि.वि., जयपुर
बैंक का नाम एवं शाखा : ICICI Bank
खाता संख्या: 67470170163
आई.एफ.एस.सी. **कोड: ICIC0006747**

आयोजन समिति

प्रो. अनिल जैन

डॉ. श्रुति शर्मा	डॉ. करतार सिंह
डॉ. रेणु व्यास	डॉ. उर्वशी शर्मा
डॉ. मंदाकिनी मीणा	डॉ. जगदीश गिरी
डॉ. वीरेन्द्र सिंह	डॉ. गीता सामौर
डॉ. कैलाश पंवार	डॉ. अर्जुन सिंह
श्रुति शर्मा	विशाल विक्रम सिंह
तारावती मीणा	अनिता रानी
सुंदरम शांडिल्य	वर्षा वर्मा

प्रेषक

डॉ. विनोद शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
संयोजक, 42वां अधिवेशन एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004
मो. 9950997599 ई-मेल : vinoddr68@gmail.com

प्रति,

_____

_____

_____

बुक-पोस्ट

भारतीय हिन्दी परिषद का 42वां अधिवेशन एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

12-13 दिसम्बर 2015

इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी : संदर्भ और चुनौतियां

भारतीय हिन्दी परिषद का 42वां अधिवेशन

एवं

अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी

12-13 दिसम्बर 2015

इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी

संदर्भ और चुनौतियां

संरक्षक

श्री जे.पी. सिंघल
कुलपति
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

संयोजक

डॉ. विनोद शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
मो. 9950997599, 7597530500

आयोजन सहयोग

प्रो. योगेन्द्र प्रताप सिंह (अध्यक्ष, भा.हि.प.)
प्रो. पवन अग्रवाल (प्रधानमंत्री, भा.हि.प.)
प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल (साहित्यमंत्री, भा.हि.प.)
प्रो. रामकिशोर (प्रबन्ध मंत्री, भा.हि.प.)

आयोजक

हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर-302004

इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी : संदर्भ और चुनौतियां

हिन्दी एक समृद्ध भाषिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परम्परा की वाहिनी है। भारत की यह एकमात्र भाषा है जो कश्मीर से कन्याकुमारी तथा कामाख्या से कच्छ तक समझी व बोली जाती है। लगभग एक हजार वर्षों से देश के विभिन्न भाषाभाषी प्रान्तों में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा व्यापारिक दृष्टि से यह भाषा भारतीय जनमानस की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। संभवत: इसका कारण हिन्दी भाषा और साहित्य में लोक से गहरे जुड़े होने की विशेषता है। हिन्दी साहित्य की मुख्यधारा आज भी वंचितों-शोषितों के पक्ष में है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदिवासी विमर्श, पर्यावरण विमर्श आदि की मौजूदगी इस बात का प्रमाण है। हिन्दी समाज ने इन विमर्शों को सहज रूप से स्वीकार किया है और इनके लिए 'लोकतांत्रिक स्पेस' सृजित किया है।

हिन्दी की समृद्धि का कारण इसकी बोलियां हैं लेकिन भूमण्डलीकृत विश्व में एक भाषा, एक संस्कृति, एक पहनावा, एक मानसिकता के सिद्धान्त के परिणामस्वरूप हिन्दी और इसकी बोलियों पर अस्तित्व का संकट उत्पन्न हुआ है। बोलियां ही भाषा की आधारभूत चेतना एवं संवेदना होती हैं और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूह का प्रतिनिधित्व करती हैं। बोलियों के खत्म होने के साथ भाषा का बाह्य कलेवर भले ही बना रहे किन्तु आन्तरिक संवेदना और समरसता समाप्त हो जाती है। ऐसे में हिन्दी और उसकी बोलियों के अन्त:सम्बन्धों पर विचार आवश्यक है।

आधुनिक सूचना तकनीकी ने हिन्दी पर गहरा असर डाला है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई क्रान्ति ने जहां हिन्दी भाषा और साहित्य के समक्ष गंभीर चुनौतियां खड़ी की हैं, वहीं नवीन अवसर भी उपस्थित किए हैं। विगत दशक में सूचना, मनोरंजन और संचार से जुड़े लगभग सभी क्षेत्रों में हिन्दी बेहद मजबूत हुई है। आज आईटी जगत हिन्दी को अनदेखा करने की स्थिति में नहीं है। सूचना प्रौद्योगिकी के हिन्दी भाषा आधारित बाजार को देखते हुए माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, फेसबुक जैसी कम्पनियां यहां अपना भविष्य तलाश रही हैं। हिन्दी के प्राय: सभी अखबार और साहित्यिक पत्रिकाएं ऑनलाइन उपलब्ध हैं। हिन्दी में ब्लॉग लेखन एक आन्दोलन की तरह फैल रहा है। इंटरनेट पर प्रसार की दृष्टि से अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी अभी पीछे है लेकिन इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं।

विगत वर्षों में अंग्रेजी के 'डायस्पोरा लिट्रेचर' की तरह हिन्दी में 'प्रवासी साहित्य' की उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज हुई है। विश्व के अनेक देशों- अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, मॉरिशस, सूरीनाम, फिजी, जापान, इण्डोनेशिया तथा मध्य पूर्व के देशों में निवासरत हिन्दी भाषी लोगों ने साहित्य रचना कर हिन्दी को समृद्ध बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रवासी साहित्य विदेशों में हिन्दी प्रचार का बड़ा माध्यम बन चुका है।

आधुनिक तकनीकी युग में जब बच्चे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और वीडियो गेम की गिरफ्त में साहित्य से दूर हो रहे हैं, तब बाल साहित्य के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता। बच्चों में सामाजिक एवं नैतिक समझ विकसित करने में बाल साहित्य की महती भूमिका रही है। परन्तु हिन्दी बाल साहित्य को उचित स्थान नहीं मिल पाया है जो एक विचारणीय प्रश्न है।

हिन्दी के देशव्यापी विस्तार एवं विभिन्न प्रदेशों की स्थानीयता ने हिन्दी साहित्य को अत्यधिक समृद्ध किया है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा प्रान्त राजस्थान हिन्दी साहित्य को निरन्तर समृद्ध करता रहा है। 'पृथ्वीराज रासो', 'ढोला मारू रा दूहा', वेलि क्रिसन रुकमणि री', 'विरुद छिहत्तरी', 'वीर सतसई' जैसी रचनाएं हिन्दी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मीराबाई, दादूदयाल, बांकीदास, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, रांगेय राघव, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र,' विजयदान देथा, कन्हैयालाल सेठिया, मन्नू भंडारी, स्वयं प्रकाश, नंदकिशोर आचार्य, नंद चतुर्वेदी, ऋतुराज, विजेन्द्र, सत्यनारायण आदि की पहचान हिन्दी के प्रमुख रचनाकारों में होती है। साहित्य की इस विविधता को रेखांकित करते हुए हिन्दी साहित्य के विकास में राजस्थान के योगदान पर चर्चा आवश्यक है।

हिन्दी देश की प्रमुख भाषा के रूप में तभी सबल बनेगी जब वह सभी भारतीयों की प्रतिनिधि भाषा हो। वह सम्पूर्ण देश को, उसके प्रान्तीय साहित्य को, उनके संस्कारों तथा जीवन को समझने के लिए एक माध्यम भाषा बन जाएगी। यह तब होगा जब भारतीय भाषाओं के साहित्य का प्रभूत मात्रा में हिन्दी में अनुवाद होगा, प्रान्तीय फिल्में हिन्दी में अनूदित होकर आयेंगी और ज्ञान-विज्ञान का साहित्य हिन्दी में उपलब्ध होगा। यदि हिन्दी को साहित्य के अलावा रोजगार की भाषा बनाना है तो हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों तथा गुणवत्तापूर्ण शोध कार्यों को बढ़ावा देना होगा।

भारतीय हिन्दी परिषद्, इलाहाबाद के 42वें अधिवेशन के अवसर पर हिन्दी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा आयोजित 'इक्कीसवीं शताब्दी में हिन्दी: संदर्भ और चुनौतियां' विषयक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी के अन्तर्गत निम्नांकित सत्रों में चर्चा होगी।

प्रथम दिवस

- समकालीन विमर्श और हिन्दी साहित्य
- हिन्दी का प्रवासी साहित्य
- हिन्दी बाल साहित्य का स्वरूप एवं विकास
- रामकथा का वैचारिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य
- हिन्दी साहित्य के विकास में राजस्थान का योगदान

द्वितीय दिवस

- हिन्दी और उसकी बोलियों का अन्तर्संबंध
- हिन्दी में विज्ञान लेखन
- सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी
- हिन्दी शोध : दशा और दिशा
- हिन्दी सिनेमा, साहित्य और मीडिया